

ईश्वरीय
खजाना
टीम
Presents

विशेष पुरुषार्थ

तीव्रता से आगे बढ़ने की श्रेष्ठ युक्तियां

यह श्रेष्ठ पुरुषार्थ की
भिन्न भिन्न युक्तियाँ
बाबा की रोज
जैसे मीठी थपकी है
अन्तर्मन में
जो समा ले इसे
जीवन में उसकी सफलता
शत प्रतिशत पक्की है...

न वो हमसे जुदा होंगे..
न उलफ़त दिल से निकलेगी..



सारे झाड़ रूपी विस्तार में एक बीज ही पावरफुल होता है ना। ऐसे ही क्वालिटी के बीज में एक भी क्वालिटी वाला है तो वह विस्तार में बीज-रूप के समान है। क्वालिटी की सर्विस करते हो? विस्तार में जाने से वा दूसरों का कल्याण करते-करते अपना कल्याण तो नहीं भूल जाते हो? जब दूसरे के प्रति जास्ती अटेन्शन देते हो तो अपने अन्दर जो टेन्शन चलता है उनको नहीं देखते हो। पहले अपने टेन्शन पर अटेन्शन दो, फिर विश्व में जो अनेक प्रकार के टेन्शन हैं उनको खलास कर सकेंगे। पहले अपने आपको देखो। अपनी सर्विस फर्स्ट, अपनी सर्विस की तो दूसरों की सर्विस स्वतः हो जाती है।

मनन चिंतन के लिए पॉइंट:-

खुद की service के लिए मैं रोज कितना समय देता/देती हूँ ?

खुद की service के लिए मैं क्या क्या करता/करती हूँ?

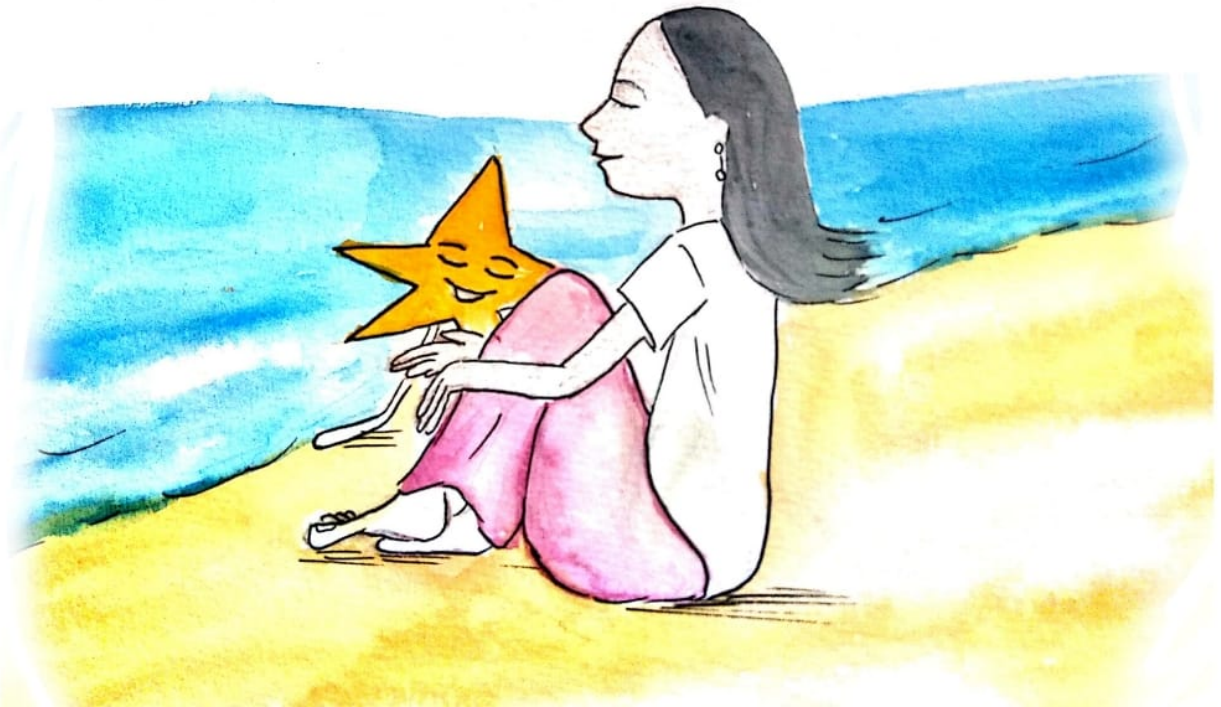
बापदादा 10/05/1972



ट्रस्टी की विशेषता क्या होती है?

ट्रस्टी की विशेषता क्या होती है? एक शब्द में कहें - ट्रस्टी अर्थात् नष्टोमोहा। ट्रस्टी का किसी में मोह नहीं होता; क्यों? क्योंकि मेरापन नहीं है। मेरे में मोह जाता है। जो भी प्रवृत्ति के अर्थ साधन मिले हुए हैं वा सेवा के अर्थ सम्बन्ध होता है, उसमें मेरापन नहीं लेकिन बाप-दादा का दिया हुआ अमानत समझकर सेवा करेंगे वा साधनों को कार्य में लगाएंगे तो सहज ही ट्रस्टी बन जाएंगे। ट्रस्टी अर्थात् मैं-पन समाप्त और बाबा-बाबा ही मुख से निकले ऐसी स्थिति है? या जिन साधनों को कार्य में लगाते हो उसमें मेरापन का भान है? मेरापन है तो देहभान आता है। अगर तन के भी ट्रस्टी है तो देह का भान हो नहीं सकता। जब से जन्म हुआ तो पहला वायदा क्या किया? जो मेरा सो बाप का। मरजीवा हो गए ना? फिर मेरापन कहां से आया? दी हुई चीज़ कभी वापिस नहीं ली जाती। तो सदा देही अभिमानी बनने का अर्थात् नष्टोमोहा बनने का सहज साधन क्या हुआ? ट्रस्टी हूँ, मैं ट्रस्टी हूँ।

The power of silence can make
the impossible, possible



अव्यक्त शिक्षाएँ



सूर्यवंशी की निशानी- सदा खुशी की रास करने वाले। सदा अतिन्द्रिय सुख के झूले में झूलने वाले। चंद्रवंशी राम को कब झूले में नहीं झुलाते हैं। रास नहीं दिखाते हैं। युद्ध का तीर कमान ही दिखाते हैं। पीछे का राज्य भाग्य मिलेगा। आधा समय का राज्य बहुकाल तो नहीं हुआ ना। तो सदा झूले में झूलते रहो। सर्व से रास मिलाते हुए, खुशी की रास करते रहो। इसको कहा जाता है- संगमयुग की प्रारब्ध स्वरूप। पुरुषार्थी हैं, यह शब्द भी कहां तक?



परिस्थिति बदलना जब
मुमकिन ना लगे... तब
अपने मन की स्थिति को
बदल लो, तो सब बदलता
हुआ ही नजर आएगा...।



मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा, आश्रम,
इतनी शांति, इतना सुकून, इतनी शक्ति,
क्यूँ महसूस होती है?

जब हम वहां हैं, हमारी हर सोच
भगवान के प्यार, सेवा भाव की है।
सोच से वातावरण बनता है।

क्या हम वही वातावरण
अपने घर का बना सकते हैं?



Brahma Kumaris Websites

Main BK website www.shivbabas.org OR
www.brahmakumari.org (by SBS team)

Int'l website: www.brahmakumaris.org

India website: www.brahmakumaris.com

BK Sustenance website:
www.bksustenance.net

All Data hosted on www.bkdrluhar.com

Murli Websites: babamurli.net
and madhubanmurli.org

www.omshantimusic.net

www.bkgoogle.org

www.bksewa.org

www.bkinfo.in

www.bk.ooo

www.brahmakumari.org/centres

NEW

www.IshvariyaKhajana.BKhq.org